JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संथाल जनजातीय समुदाय मे मादक द्रव्यों के सेवन और उसके प्रभाव का ऐतिहासिक विश्लेषण

(Historical analysis of substance abuse and its impact in the Santhal tribal community)

(झारखंड राज्य के दुमका जिले के विशेष संदर्भ में)

(With special reference to Dumka, District of Jharkhand State)

Dr. Sandeep Kumar Mandal

Head,Department of History, Degree College Mahagama Godda, Jharkhand 814154

प्रस्तावना :- जनजातीय समाज में शराब का सेवन प्राचीन काल से ही चलता आ रहा है, क्योंकि शराब जनजातीय समाज की संस्कृति से जुड़ा हुआ है। जनजातीय समाज समय-समय पर शराब अपने कुलदेव को भी अर्पण करते हैं। संथाल जनजाति अपने घर पर जब पूजा पाठ करते हैं और किसी प्रकार के बलि देते हैं, उस समय अपनी देवता को शराब अर्पण करते हैं। इसलिए शराब उनकी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। झारखंड राज्य के जामा प्रखंड के अंतर्गत चिकनियां ग्राम पंचायत के लकरजोरिया गांव में संथाल जनजाति समाज के लोग निवास करते हैं। यह गांव में शराब बनाने से लेकर बेचने तक के परंपरा है। क्योंकि यहां की महिलाएं शराब बनाती है और अपने घर के बगल में एक फील्ड है वहां पर जाकर शराब बेचती है। शराब इसलिए महिलाएं बेचती है, क्योंकि शराब बेचने से उन्हें कुछ आय प्राप्त हो जाता है। लेकिन शराब सेवन करने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ता जा रहा है। जिसका परिणाम यह है कि लोग शराब के आदि हो चुके हैं, जिसके कारण अधिक मात्रा में शराब सेवन करने से यहां के लोगों की काफी स्वास्थ्य समस्या हो रहा है। यहां तक की शराब सेवन करने की वजह से लोगों की मृत्यु तक भी हो चुका है। यह जनजाति लोग एक भोले-भाले प्रवृत्ति के हैं। लेकिन समझ नहीं पाते हैं कि शराब का दुष्प्रभाव क्या है, शराब के दुष्प्रभाव से हमेशा अनजान रहे हैं। जिसका नतीजा इस जनजाति समुदाय के लोगो को भोगना पड़ रहा है।

कुंजी शब्द:- मादक द्रव्यों का सेवन, स्वास्थ्य समस्या, गरीबी का जन्म, परिवारिक विखराव, और कार्य नहीं करने की इच्छा

पहले शराब का सेवन की मात्रा कम था क्योंकि यह जनजाति समाज के लोग पारंपरिक तरीके से बनाते थे और किसी पूजा-पाठ, उत्सव, विवाह, पर्व-त्यौहार, किसी पार्टी आदि के समय अपने शौक से शराब का सेवन करते थे। लेकिन वर्तमान समय में संथाली जनजातीय समाज में शराब का सेवन उनके जीवनचार्य से जुड़ा हुआ है। जिसके कारण बनाने से लेकर बिक्री और शराब का सेवन तक इसका भरपूर उपयोग कर रहे है। जिसका परिणाम यह है कि लोग शराब के लत में अपनी सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक बिखराव को जन्म दे रहे हैं। क्योंकि इसका सेवन अधिक लोग कर रहे हैं। जहां शराब उनकी संस्कृति से जुड़ा हुआ है वही अब आधुनिकता में उनकी यही शराब एक समस्या के रूप में उभरता हुआ दिखाई दे रहा है। जब लकरजोरिया गांव से तथ्य प्राप्त किया गया तो सामने या निकल कर आया कि यह गांव में शराब घर-घर बनता है, तथा बेचने का भी काम किया जाता है। बहुत छोटी सी उम्र के बच्चे भी शराब की पूरी गतिविधि को देखकर उसको अनुकरण करने लगते हैं। नाबालिक उम्र से ही शराब, गुटखा, सिगरेट आदि का सेवन वह खुद करने लगते हैं, मानो जैसा उनको विरासत मे मिला हुआ है। क्योंकि यह सारे चीज उनकी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, लेकिन यह कितना खतरनाक

है। शारीरिक संरचना को कैसे प्रभावित करता है और किस प्रकार पूरे शरीर की कोशिकाओं को प्रभावित करता है इन सभी से यह संथाली जनजाति के लोग अनजान रहे हैं। आज विकास के दौर में जहां लोग प्रतिदिन प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं तथा अपने परिस्थिति के सुधार रहे हैं। वहीं यह जनजाति समाज के लोग अपने स्थिति को कमजोर कर रहे हैं।

शराब की सेवन से होनेवाली समस्याएं :- संथाल जनजातीय समाज में अत्यधिक मात्रा में शराब का सेवन करने से अनेक लोगों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं निकलकर आया है। कुछ लोगों का कहना था की वह इतना शराब का सेवन करते हैं कि वे अब लीवर संबंधी बीमारी, हृदय रोग, मानसिक समस्या से ग्रसित है। स्वास्थ्य संबंधी समस्या के साथ-साथ आर्थिक समस्या भी लोगों को हुआ है। क्योंकि मजदूरी के कार्य करते हैं तब 300-400 रु प्राप्त करते हैं, लेकिन अपने एक दिन के आय का आधा पैसा शराब में उड़ा देते हैं। जिससे उनके परिवार में गरीबी का जन्म होता है। यह सिलसिला पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ते ही जा रहा है। यह लोग अपने आय का गलत उपयोग के वजह से अपने न्यूनतम आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। यह संथाली समाज के लोग शराब पीकर अपने परिवार में गरीबी और भुखमरी की प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहे हैं। जिसके कारण इस गांव के शराब पीनेवाले लोग अपने परिवार और समाज को बर्बाद कर रहे हैं।

साहित्य पुनरावलोकन:- भारत में शराब का सेवन एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। गुजरात एवं बिहार जैसे राज्य में शराब के सेवन पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध है। फिर भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहां वयस्कों में शराब का सेवन 75 प्रतिशत के आस-पास है। भारत के ग्रामीण आदिवासी समुदाय में शराब के सेवन में अत्यधिक वृद्धि पाई गई है। मध्य प्रदेश में पाया गया कि आदिवासी लोगों में शराब का सेवन 29.93 प्रतिशत था जो गैर आदिवासी समुदाय से दोगुना से भी अधिक था। अरुणाचल प्रदेश में जनजाति लोगों में से 49 प्रतिशत पुरुष 28 प्रतिशत महिला नियमित रूप से शराब का सेवन करती है। इस प्रकार भारत में कुछ आदिवासी समुदाय में शराब का सेवन एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, यह शराब का सेवन असमानता एवं गरीबी को बढ़ाता है**(Ray, eti all. 2018)**। दुनिया भर में लोगों को मादक द्रव्य पदार्थ के दुरुपयोग से खतरा बढ़ता जा रहा है। तंबाकू, शराब, भांग का सेवन अधिक किया जा रहा है। भारत में जनजातीय समाज में मादक द्रव्यों के सेवन का जांच किया गया तो पता चला कि शराब का सेवन 26 प्रतिशत, धूम्रपान का सेवन 25 प्रतिशत लोग करते हैं। मादक द्रव्य के सेवन से अनेक लोगों का स्वास्थ्य समस्या बढ़ता गया है। भारत में आदिवासी जीवन की अधिकांश घटनाएं शराब के सेवन से जुड़ी हुई है। उदाहरण के लिए अंतिम संस्कार, वर-वधु की सभाओं, विवाह तय करते समय, आदिवासी त्योहार और समारोह में जनजातीय समाज शराब का उपयोग भरपूर किया करते हैं। आदिवासियों के घर में शराब के उपलब्धता भी रहता है जिसके कारण इसका उपयोग अधिक होता है, इन्हीं के साथ-साथ शराब सेवन का जोखिम बढ़ता जाता है**(Sadath eti all. 2023)**। मादक द्रव्य के दुरुपयोग से स्वास्थ्य समस्या को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है। शराब का अधिकांश सेवन से समस्या होना आरंभ हो जाता है। यहा तक की शराब सेवन करने वाले व्यक्ति का व्यवहार में भी परिवर्तन पाया गया है। शराब सेवन करने वाला व्यक्ति के व्यवहार भी जोखिम भरा रहता है। भारत में जनजातीय समाज में मानसिक स्वास्थ्य समस्या अधिक होता है। यह लोग मादक द्रव्य को अधिक सेवन करते हैं जिससे इनका समस्या और बढ़ता ही जाता है। आदिवासी समुदाय के लोगों में अपनी संस्कृति और मादक द्रव्य के सेवन की भूमिका पर अधिक जोर दिया है। सामाजिक तौर पर उससे स्वीकार भी किया गया है। शराब का अधिक सेवन ने उनका जीवन शैली को अधिक प्रभावित किया है**(Ali, eti all. 2024)**। मादक द्रव्यों के सेवन से तात्पर्य नशीली पदार्थों के सेवन से है। मादक द्रव्य का सेवन से अकाल मृत्यु और बीमारी का एक महत्वपूर्ण कारण माना गया है। मादक द्रव्य के सेवन से मानव जीवन की अर्थव्यवस्था, उत्पादकता और सामाजिक कल्याण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। NEI मे किए गए विभिन्न लघु स्तरीय अध्ययनो से पता चला है कि देश के हिस्से में मादक द्रव्यों का सेवन अधिक है। इसका दुष्प्रभाव भी सेवन करने वाले लोगों पर पड़ता है**(Saikia & Debbarma. 2019)**। शराब का सेवन लोगों के संस्कृतियों के साथ जुड़ा हुआ है। इसका सेवन से शरीर पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति के हृदय संबंधी रोग, कैंसर, यकृत और मानसिक बीमारी होना आम बात है। शराब का अधिक सेवन से घर के बच्चे पर प्रभाव, घरेलू हिंसा, आर्थिक अस्थिरता यह सब प्रभावित होता है। शराब के सेवन से यातायात से दुर्घटना होना अब आम बात है**(Rose eti all. 2015)**। शराब दुनिया भर में मृत्यु और विकलांगता

के अनेक कारकों में से एक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार एक चौथाई में से एक तिहाई पुरुष लोग शराब पीते हैं। महिलाओं में यह प्रवृत्ति बढ़ रहा है। भारत में शराब के पीने वाले के अनुमानित संख्या 63 मिलियन है। जिनमें से 17.4 प्रतिशत शराब के उपयोगकर्ता बीमारी में जब लोग अस्पताल में भर्ती हुए इलाज के लिए तो 20 से 30 प्रतिशत लोगों को शराब सेवन करने से स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न हुआ था(**Patra, eti all. 2023**)। मादक द्रव्यों के सेवन से तात्पर्य शराब और अवैध दवाओं सहित मादक सक्रिय पदार्थ के हानिकारक उपयोग से है। भारत में बच्चों के बीच मादक द्रव्यों का सेवन एक ज्वलंत मुद्दा बन गया है। आंकड़े बताते हैं कि अधिकांश मरीज शराब का सेवन बचपन से ही उपयोग करना आरंभ कर दिए थे। यह मादक द्रव्य का सेवन सामाजिक समस्याओं की ओर ले जाता है। चाइल्ड लाइन के अनुसार भारत में नशीली दवाओं और मादक द्रव्य के सेवन में शामिल 13 प्रतिशत लोग 20 वर्ष से कम आयु के थे, जिसमें हीरोइन, अफीम, शराब, भांग आदि का सेवन करते थे(**Suresh & S, 2015**)। स्वदेशी युवाओं में अन्य कनाडा युवाओं की तुलना में तंबाकू शराब का सेवन करने की संभावना अधिक होती है। इसका सेवन से किशोरावस्था के युवाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। शारीरिक शोषण, घरेलू मानसिक बीमारी जैसे समस्या मादक द्रव्य पदार्थों के सेवन से उत्पन्न होता है। नकारात्मक प्रभाव भी मादक द्रव्य सेवन से व्यक्ति के ऊपर सक्रिय होने लगता है। धूम्रपान और शराब का सेवन से युवाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिससे अनेक स्वास्थ्य संबंधी लक्षण दिखाई देने लगता है(**Sikorski, eti all. 2019**)। भारत में जब अध्ययन किया गया तो पता चला कि आदिवासी आबादी में शराब का सेवन अधिक है। अत्यधिक शराब पीने से अनेक बीमारियों के कारण बनता है। पीने वाला व्यक्ति पर हानिकारक प्रभाव छोड़ता है। देश के ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में शराब का सेवन बढ़ रहा है। इसके खतरनाक प्रभाव के बारे में जागरूकता की कमी है(**Kumar & Tiwari. 2016**)। शराब का अत्यधिक सेवन व्यवहारों को प्रभावित करता है। बार-बार शराब सेवन से व्यक्ति को लत लग जाता है और समस्या होना आरंभ हो जाता है। शराब सेवन से स्वास्थ्य संबंधित समस्या के अलावा व्यक्ति के सामाजिक कामकाज और आर्थिक विकास दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति की सोच और उसके जीवन जीने के तरीके पर असर पड़ता है। 2011 के जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 8.6 प्रतिशत है। जनजातियों में शराब की खपत बढ़ रही है और उनके जीवन की गुणवत्ता की स्तर में गिरावट आ रहा है (**Joseph, eti all. 2023**)।

शोध अंतराल :- झारखंड राज्य के संथाल परगना एक बहुल जनजाति क्षेत्र है। यहां संथाल जनजाति की आबादी अधिक है। यह जनजाति पेय पदार्थ को अधिक महत्व देती है, क्योंकि यह पेय पदार्थ उनकी संस्कृति से जुड़ा हुआ है। उत्सव और सभी अवसरों पर शराब का अधिक उपयोग करते हैं, लेकिन पेय पदार्थ का उपयोग प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। यह शराब उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है और आर्थिक नुकसान भी पहुंचाता है। पूरे परिवार और समाज मे बिखराव लाता है। इस पर अध्ययन बहुत कम हुए हैं की शराब एक तरफ जहां संथाली जनजाति समाज की संस्कृति से जुड़ा हुआ है, वही उनके लिए बहुत खतरनाक भी है, इसलिए यह अध्ययन अपेक्षणीय है।

उद्देश्य:- संथाल जनजातीय समाज में शराब के सेवन से उनके परिवार और समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है उसको समझाना।

आँकड़ों के संकलन की विधि :- यह शोध संथाल जनजातीय समाज पर आधारित है। संथाली समाज में मादक द्रव्यों का भरपूर सेवन किया जाता है। उससे संबंधित तथ्य प्राप्त करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक शोध प्रविधि का उपयोग करके तथ्य प्राप्त किया गया है। गुणात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत व्यक्ति के व्यवहार, कारणों, व्यक्तिक लेखों, साक्षात्कारों और सहभागी प्रेषण विधियों का प्रयोग करके तथ्य को प्राप्त किया गया है। मात्रात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत सर्वेक्षण, स्ट्रक्चर इंटरव्यू, अवलोकन, रिकॉर्ड और रिपोर्ट के रिव्यू आदि के माध्यम से तथ्य का संकलन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र कार्य में झारखंड राज्य के दुमका जिला के जामा प्रखंड के चिकनिया ग्राम पंचायत के अंतर्गत लकरजोरिया गांव के संथाली जनजाति समुदाय से 40 पुरुषों को साक्षात्कार करके उनसे तथ्य प्राप्त किया गया है। यह गांव में मुख्य रूप से तीन टोला है, जिसमें

संथाली जनजाति के अतिरिक्त पहाड़िया जनजाति एवं दीकू समाज के लोग मुख्य रूप से निवास करते हैं। लेकिन सबसे ज्यादा जनसंख्या संथाल जनजाति समाज का है। जिसे शराब का क्या उपयोग है और उसका क्या समाज पर प्रभाव पड़ रहा है से संबंधित तथ्य प्राप्त किया गया है।

संरचित साक्षात्कार अनुसूची:- यह शोध प्रविधि के अंतर्गत संथाल जनजाति समाज में शराब का क्या महत्व है। उसका दुष्प्रभाव समाज पर क्या है, से संबंधित तथ्य संग्रहण के लिए संरक्षित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है। संरक्षित साक्षात्कार के अंतर्गत शराब के उपयोग से क्या समस्या उत्पन्न होता है तथा यह कैसे असमानताओं को जन्म देता है, आदि से संबंधित साक्षात्कार कर वास्तविक तथ्य प्राप्त किया गया है।

विश्लेषण :- झारखंड राज्य के दुमका जिले के लकरजोरिया गांव में शराब का सेवन करने वाले लोगों का समय के अनुसार परिस्थिति बदलता गया है। क्योंकि यहां की संथाली समाज की पुरुष लोग पहले स्वदेशी मादक द्रव्य पदार्थ का सेवन सीमित मात्रा में करते थे, जिसका उतना प्रभाव परिवार से लेकर समाज पर नहीं पड़ता था। बल्कि किसी फंक्शन, पार्टी और उत्सव के अवसर पर ही इसका उपयोग करते थे। उत्सव पर शराब का उपयोग इसलिए करते थे क्योंकि यह उनके संस्कृति का एक भाग है। जैसे अपने कुलदेव की पूजा करते हैं या बलि देते हैं तब शराब अपने देव पर अर्पण करना मजबूरी हो जाता है। इसलिए लोग अधिकांश किसी अवसर पर ही इसका उपयोग करते थे। लेकिन वर्तमान समय में यह संथाली जनजाति समाज के लोग इसका उपयोग प्रतिदिन कर रहे हैं। पुरुष के साथ-साथ महिलाएं भी शराब का सेवन भरपूर मात्रा में कर रही है। जिससे लोगों में पारिवारिक विखराव की स्थिति सामने आया है। क्योंकि शराब पीकर अधिकांश लोग अपने दैनिक जीवन में मजदूरी कार्य और अनेक ऐसी चीजों से दूर होते जा रहे हैं। कुछ पुरुष लोग मजदूरी करके कुछ आया प्राप्त करते हैं, लेकिन यह आय का आधा पैसा शराब में ही गंवा देते हैं। जिससे उनका आर्थिक हानि भी होता है। यह गांव में शराब का सेवन इतना बढ़ गया है कि उनकी पहचान भी खतरे में है। ऐसी स्थिति में यह लोग शराब के आदी हो चुके हैं, क्योंकि शराब उनकी जीवन का मानों एक हिस्सा बन गया हो उसे उस तरह से शराब को बनाने से लेकर पीने तक भरपूर उपयोग कर रहे हैं। फिर भी इतनी समस्या होते हुए भी शराब के दुष्प्रभाव से संथाली जनजाति अनजान रहे हैं।

शोध का महत्व :-

- संथाली समाज की वास्तविक विकास के लिए जरूरी है की मादक द्रव्य पदार्थों से होने वाला नुकसान एंव समस्या पर विचार किया जाएं।
- मादक द्रव्य पदार्थ के उपयोग से जो परिवार मे विखराव आ रहा है संक्षित किया जाए।
- यह समाज के विकास के लिए शिक्षा के बारे मे जागरूकता फैलाया जाए तथा मादक पदार्थ के दुष्प्रभाव से अवगत कराया जाए।

निष्कर्ष :- झारखंड राज्य के संथाल परगना के अंतर्गत दुमका जिला के जामा प्रखंड के चिकनिया ग्राम पंचायत के अंतर्गत लकरजोरिया गांव के संथाली जनजाति समाज से पेय पदार्थ से संबंधित तथ्य प्राप्त किया गया। तो यह सामने निकलकर आया कि यह गांव के सभी जनजाति समाज के लोग खासकर संथाली लोग शराब बनाने का काम करती है। इसके साथ बेचने का भी कार्य करती है, क्योंकि इससे उनको कुछ आया प्राप्त हो जाता है। लेकिन यह पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आ रहा है, क्योंकि शराब बनाना और पीना उनके संस्कृति का एक अटूट हिस्सा है। जो पारंपरिक तरीके से चलता आ रहा है। यह एक परंपरा के रूप में संथाली समाज में प्राचीन काल से ही विख्यात है। इसलिए उनके बच्चे भी अपने घर के परिवेश के अनुसार, इस संस्कृति का फायदा भरपूर उठाते हैं। छोटे-छोटे बच्चे भी शराब, गुटका ,बीड़ी पान आदि जैसे नशीले पदार्थों का भरपूर उपयोग करते हैं। क्योंकि यह सारे पदार्थ कहीं न कहीं उनके संस्कृति से जुड़ा हुआ है। लेकिन यह

भोले-भाले जनजाति समाज के लोग शराब और जितने भी नशीले पदार्थ है, उनका क्या शरीर और परिवार पर प्रभाव पड़ता है या उनसे क्या हानि होता है। यह सारी चीज से लोग अनजान रहे हैं, इसके बारे में उन्हें ज्ञान नहीं है। यही कारण है कि यह संथाली समाज के लोग शराब का सेवन भरपूर मात्रा में कर तो लेते हैं, लेकिन उसे जों नुकसान हो रहा है उसकी खामियां उनको भुगतना पड़ रहा है। क्योंकि पहले शराब का सेवन यह समाज के लोग एक सीमित मात्रा में करते थे, किसी त्योहार, पार्टी, उत्सव या अनेक अवसरों पर करते थे। लेकिन वर्तमान समय में यह शराब का सेवन उनके जीवन चर्या से जुड़ा हुआ है। मानो जैसे बिना शराब के रह ही नहीं रह सकते हैं, यदि वह मजदूरी का कार्य भी दिन में करते हैं, तो भी उनको शाम को शराब चाहिए वह बिना शराब के नहीं रह सकते हैं। ऐसी स्थिति में शराब के दुष्प्रभाव का छाप यह समाज पर काफी पड़ा हुआ है। तथ्य प्राप्त करते समय पारिवारिक बिखराव, आर्थिक हानियां जैसे अनेक तथ्य प्राप्त हुए हैं।

संदर्भ सूची-:

- Ray, J. Som, K. Paul, R. & Bandyopadhyay, D. (2018). Prevalence of Alcohol use Among Tribal Population Based on Self-Reported Data: A Hospital-based Pilot Study from West Bengal. *Journal, Indian Academy of Clinical Medicine*. 19 (4). 269-270. Retrieved from https://jiacm.in/pdf_dec2019/Rudrajit_Paul_269_73.pdf
- Suresh, V & S, V. (2015). Substance Abuse among Tribal Children at Wayanad District, Kerala. *International Journal of Preventive, Curative & Community Medicine* 1 (3). 103-104. Retrieved from https://core.ac.uk/download/354382058.pdf
- Sadath, A. Kabir, Z. M, J., K. G, R., & Uthaman, S. (2023). Smoking, betel quid chewing, and alcohol use among an indigenous primitive Tribal group in the Kerala State of India: Secondary analysis of a Tribal household survey. *Journal of Ethnicity in Substance Abuse.* 34 (1). 138-139. https://doi.org/10.1080/15332640.2023.2185721
- Ali, A. Gujar, N., M. Deuri, S., P. Deuri, S., K. (2024). Prevalence of Mental Health Problems and Substance Use Among Schoolgoing Adolescents of Tribal Ethnicity: A Preliminary Study from North-East India. *Journal of Indian Association for Child and Adolescent Mental Health*. 20 (1). 18-20. DOI: 10.1177/09731342241239190
- Saikia, N. Debbarma, B. (2019) The socioeconomic correlates of substance use among male adults in Northeast India. *Clinical Epidemiology and Global Health.* 8 (1).149-150. https://doi.org/10.1016/j.cegh.2019.06.004
- Rose, A. Rachana, A. Minz, S. & George, K. (2015). Community perspectives on alcohol use among a tribal population in rural southern India. *THE NATIONAL MEDICAL JOURNAL OF INDIA*. 28 (3). 117-119. Retrieved from https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/26724338/
- Patra, S. Sethy, B. Padhi, P., k. (2023). Cumulative Impact of Alcohol Use in Tribal Patients with Alcoholic Liver Disease [ALD] in North Odisha, India. *International Journal of Pharmaceutical and Clinical Researc.* 15 (11). 601-602. Retrieved from https://impactfactor.org/PDF/IJPCR/15/IJPCR,Vol15,Issue11,Article102.pdfh

- Kumar. R. K. & Tiwari,R. (2016). A cross sectional study of alcohol consumption among tribal and non-tribal adults of Narayanganj block in Mandla district of Madhya Pradesh, India. *International Journal of Community Medicine and Public Health*. 3 (4). 791-792. DOI: http://dx.doi.org/10.18203/2394-6040.ijcmph20160737
- Sirorsri, C. Leatherdale, S. & Coore, M. (2019). Tobacco, alcohol and marijuana use among Indigenous youth attending off-reserve schools in Canada: cross-sectional results from the Canadian Student Tobacco, Alcohol and Drugs Survey. *Health Promotion and Chronic Disease Prevention in Canada*.39 (6). 207-208. https://doi.org/10.24095/hpcdp.39.6/7.01
- Joseph, N. Jethwani, L., M. (2023). Quality of Life and Alcohol Use among Scheduled Tribes in Wayanad District of Kerala. *The International Journal of Indian Psychology*. 11 (2). 311-314. DOI: 10.25215/1102.032